Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय लोक एवं जनजातीय कलाओं का अंतर्राष्ट्रीय फैशन में अनुप्रयोग: स्थानीय परंपरा, वैश्विक नीतिगत ढांचा और आर्थिक सशक्तिकरण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

अर्चना गर्ग*

* असिस्टेंट प्रोफेसर (चित्रकला) स्वामी शुकदेवानंद विश्वविद्यालय, शाहजहांपुर (उ.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय लोककलाएँ भारत की बहुलतापूर्ण सांस्कृतिक संरचना, सामाजिक स्मृति, धार्मिक विश्वासों, सामुदायिक जीवन और स्थानीय ज्ञान-परंपराओं की दृश्य अभिव्यक्ति हैं। मधुबनी, वारली, गोंड, पिथोरा, पट्टचित्र, कलमकारी, ऐपन, मंजूषा अन्य लोक एवं जनजातीय कला-परंपराएँ लंबे समय तक स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित होती रही हैं। इक्कीसवीं सदी में वैश्वीकरण, डिजिटल तकनीक, फैशन उद्योग, ई-कॉमर्स, सोशल मीडिया, अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों और डिजाइन शिक्षा ने इन कला-परंपराओं को स्थानीय सीमाओं से बाहर पहुँचाने के नए अवसर उत्पन्न किए हैं।

वर्तमान शोध-पत्र का उद्देश्य समकालीन अंतरराष्ट्रीय फैशन और टेक्सटाइल में भारतीय लोककलाओं के प्रभाव का आलोचनात्मक अध्ययन करना है। शोध में विशेष रूप से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पारंपरिक लोक कला-मोटिफ आधुनिक परिधान, प्रिंट, सतह-सज्जा, होम टेक्सटाइल, एक्सेसरी, ब्रांडिंग, डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया में किस प्रकार पुनर्व्याख्यायित हो रहे हैं। अध्ययन यह भी विश्लेषित करता है कि लोककला का वैश्विक बाजार में प्रवेश केवल सौंदर्यात्मक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक पहचान, आर्थिक अवसर, महिला सशक्तिकरण, शिल्पकार आजीविका, सतत फैशन और सांस्कृतिक कूटनीति से भी जुड़ा हुआ है।

शोध मुख्यत: द्वितीयक स्रोतों, आधिकारिक दस्तावेजों, अकादमिक लेखों, भारत सरकार के हस्तशिल्प संबंधी स्रोतों और समकालीन डिजाइन-संबंधी अध्ययनों पर आधारित है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय लोककलाएँ आधुनिक डिजाइन में केवल सजावटी पैटर्न के रूप में प्रयुक्त नहीं हो रही हैं, बल्कि वे कथा, पहचान, स्थान, समुदाय और सांस्कृतिक स्मृति के वाहक के रूप में भी कार्य कर सकती हैं। दूसरी ओर, वैश्विक फैशन बाजार में इनके उपयोग के साथ सांस्कृतिक appropriation, कलाकारों को उचित श्रेय न मिलना, आर्थिक असमानता, प्रतीकों का संदर्भ-विहीन प्रयोग, मशीन-निर्मित नकल और बौद्धिक संपदा संरक्षण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

अत: भारतीय लोककलाओं का अंतरराष्ट्रीय विस्तार तभी सांस्कृतिक रूप से सार्थक माना जा सकता है जब आधुनिक डिजाइन नवाचार के साथ कलाकारों और समुदायों की भागीदारी, उचित पारिश्रमिक, श्रेय, भौगोलिक संकेतक, दस्तावेजीकरण और सांस्कृतिक संदर्भ की रक्षा सुनिश्चित की जाए।

शब्द कुंजी – भारतीय लोककला, जनजातीय कला, समकालीन फैशन, टेक्सटाइल डिजाइन, डिजिटल मीडिया, सांस्कृतिक विरासत, वैश्वीकरण, सतत फैशन, मधुबनी, वारली, गोंड।

प्रस्तावना – भारत की सांस्कृतिक पहचान उसकी भाषायी, धार्मिक, भौगोलिक और सामाजिक विविधता में निहित है। इस विविधता का अत्यंत प्रभावशाली दृश्य रूप भारतीय लोक एवं जनजातीय कलाओं में दिखाई देता है। लोककला केवल सजावटी चित्रण नहीं है, बल्कि वह समुदाय के जीवन अनुभव, धार्मिक विश्वास, सामाजिक संरचना, प्रकृति के साथ संबंध और सामूहिक स्मृति को व्यक्त करने वाली दृश्य भाषा है।

वैश्वीकरण और समकालीन कला के दौर में फैशन उद्योग केवल परिधान निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक पहचान का माध्यम बन चुका है। उपभोक्ता अब 'फास्ट फैशन' के बजाय ऐसी वेशभूषा को प्राथमिकता दे रहे हैं जो अनूठी, टिकाऊ और समृद्ध इतिहास से जुड़ी हो।

भारत की ग्रामीण और जनजातीय आबादी के पास कला और वस्त्र निर्माण की एक अद्वितीय विरासत है। जहाँ शास्त्रीय कलाओं को ऐतिहासिक रूप से राजकीय संरक्षण प्राप्त था, वहीं लोक और जनजातीय कलाएँ आम जनमानस के दैनिक जीवन, लोक कथाओं, प्रकृति और धार्मिक आस्थाओं से सीधे तौर पर विकसित हुईं। वर्तमान में, वैश्विक डिजाइनर (जैसे रितु कुमार, सब्यसाची मुखर्जी, राहुल मिश्रा और अंतर्राष्ट्रीय लक्जरी घराने) इन स्थानीय डिजाइनों को आधुनिकता के साथ जोड़कर वैश्विक बाजार में पेश कर रहे हैं, जिससे भारत की कलाओं को एक नई दिशा मिली है।

प्रमुख स्थानीय एवं जनजातीय कलाएँ: क्षेत्रीय विवरण एवं फैशन अनुकूलन

मधुबनी या मिथिला कला (बिहार – स्थानीयतारू दरभंगा, मधुबनी, लहरियासराय)

कलात्मक विशेषता– यह कला मुख्य रूप से महिलाओं द्वारा दीवारों और आँगन में की जाती थी। इसमें ज्यामितीय पैटर्न्स, चमकीले प्राकृतिक रंगों (जैसे हल्दी, नील, पलाश के फूल) और दोहरी रेखाओं (Double

borsers) का उपयोग होता है। इसके मुख्य रूपांकनों में कमल, मछली, कछुआ, और स्थानीय लोक गाथाएँ शामिल हैं।

फैशन रूपांतरण– वैश्विक फैशन में मधुबनी को ट्यूनिक्स, सिल्क स्कार्फ, ट्रेंच कोट और इवनिंग गाउन पर डिजिटल और ब्लॉक प्रिंटिंग के माध्यम से उतारा गया है। पेरिस और न्यूयॉर्क के समकालीन फैशन शो में इसके ज्यामितीय बॉर्डर को कपड़ों के कॉलर और कफ पर बेहद पसंद किया जाता है।

वारली कला (महाराष्ट्र – स्थानीयतारू ठाणे, पालघर, नासिक की जनजातियाँ)

कलात्मक विशेषता– वारली जनजाति द्वारा बनाई जाने वाली यह कला अत्यंत सरल और न्यूनतमवादी (Minimalist) होती है। इसमें केवल त्रिकोण, वृत्त और सीधी रेखाओं का उपयोग कर दैनिक जीवन (कृषि, नृत्य, उत्सव) को दर्शाया जाता है। इसमें पारंपरिक रूप से मिट्टी की दीवारों पर सफेद रंग (चावल के पेस्ट) से पेंटिंग की जाती है।

फैशन रूपांतरण– इसकी सादगी के कारण वारली कला को वैश्विक स्तर पर रेडी-टू-वियर (Prêt-à-Porter) सेगमेंट, जैसे कि मोनोक्रोमैटिक (श्वेत-श्याम) टी-शर्ट्स, समर जैकेट्स, डेनिम पैचवर्क और अर्बन स्ट्रीटवियर में बड़े पैमाने पर अपनाया गया है। टोक्यो और मिलान के फैशन बाजारों में इसका मिनिमलिस्ट लुक अत्यधिक लोकप्रिय है।

गोंड कला (मध्य प्रदेश – स्थानीयता: डिंडोरी, मण्डला, छिंदवाड़ा)

कलात्मक विशेषता– गोंड जनजाति की इस कला की आत्मा इसकी जटिल रेखाओं, बिंदुओं (Dots and Dashes) और जीवंत रंगों में बसती है। यह कलाकृति एक प्रकार का भ्रम या 'विजुअल काइनेटिक्स' पैदा करती है। इसके रूपांकन मुख्य रूप से 'ट्री ऑफ लाइफ' (प्रकृति और जीवों का अंतर्संबंध) और स्थानीय मिथकों पर आधारित होते हैं।

फैशन रूपांतरण– लक्जरी परिधानों में गोंड कला की जटिल बुनावट को जैक्वार्ड (Jacquard) और ब्रोकेड वस्त्रों में समाहित किया गया है। राहुल मिश्रा जैसे डिजाइनरों ने अपने अंतर्राष्ट्रीय कलेक्शंस में गोंड रूपांकनों की विस्तृत हाथ की कढ़ाई (Hand Embroidery) का प्रदर्शन वैश्विक रैंप पर किया है।

पिथोरा कला (गुजरात और मध्य प्रदेश सीमा – स्थानीयता: छोटा उदेपुर, झाबुआ)

कलात्मक विशेषता– राठवा और भील जनजातियों की यह एक अत्यंत पवित्र अनुष्ठानिक कला है। इसमें दीवारों पर बोल्ड, अमूर्त और ऊर्जावान घोड़ों (Divine Horses) तथा आदिवासी देवताओं का चित्रण किया जाता है। इसमें रंगों का चुनाव बेहद गहरा और चटक (लाल, पीला, हरा) होता है। फैशन रूपांतरणरू इसके बोल्ड और बड़े रूपांकनों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हाई-एंड विंटर ओवरकोट्स, बड़े स्टेटमेंट स्कार्फ और चमड़े/वेगॉन लेदर के जैकेट्स पर एम्बॉसिंग या स्क्रीन प्रिंटिंग के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है।

उत्तर-पूर्वी राज्यों के जनजातीय वस्त्र (नागालैंड और असम – स्थानीयता: कोहिमा, मोकोकचुंग, कारबी आंगलांग)

कलात्मक विशेषता– नागा और राभा जनजातियों के पारंपरिक वस्त्र उनकी सामाजिक पहचान का प्रतीक हैं। लॉइन-लूम (Loin Loom) पर बुने जाने वाले इन कपड़ों में बोल्ड वर्टिकल और हॉरिजॉन्टल धारियाँ (Stripes) और विशिष्ट ज्यामितीय आकृतियाँ होती हैं, जो लाल, काले, और पीले रंगों के अनूठे संयोजन से बनती हैं।

फैशन रूपांतरण– इन वस्त्रों की मोटी और मजबूत बनावट (Heavy Texture) के कारण इन्हें वैश्विक स्तर पर विंटर ब्लेजर्स, ट्रेंच कोट्स, यूटिलिटेरियन जैकेट्स और सस्टेनेबल ओवरकोट्स के रूप में पुनर्कल्पित (Reinterpreted) किया गया है।

सांख्यिकीय एवं आर्थिक विश्लेषण– भारतीय लोक और जनजातीय कलाओं के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में प्रदर्शन और उनकी वित्तीय क्षमता को समझने के लिए निम्नलिखित डेटा तालिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं:

तालिका 1 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

तालिका 2 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

नीतिगत विश्लेषण– भारतीय कपड़ा मंत्रालय की नवीनतम नीतियां

भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय ने पारंपरिक शिल्पों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जोड़ने के लिए कई रणनीतिक कदम उठाए हैं। नीचे दिया गया तुलनात्मक चार्ट इन नीतियों के व्यापक उद्देश्यों और जनजातीय क्षेत्रों पर उनके प्रभाव को स्पष्ट करता है:

तालिका 3 (अन्तिम पृष्ठ पर देखे)

चुनौतियाँ एवं विमर्श

सांस्कृतिक विनियोग बनाम सराहना – जब कोई वैश्विक ब्रांड बिना किसी क्रेडिट या एथिकल समझ के किसी आदिवासी समुदाय के धार्मिक या पवित्र प्रतीकों (जैसे पिथोरा के अनुष्ठानिक घोड़े) का उपयोग कमर्शियल कपड़ों पर करता है, तो वह 'विनियोग' की श्रेणी में आता है। फैशन उद्योग को 'सराहना' (Appreciation) की ओर बढ़ना होगा, जहाँ समुदाय की अनुमति और इतिहास को सम्मान दिया जाए।

डिजिटलीकरण बनाम मौलिकता का संकट– डिजिटल प्रिंटिंग के कारण डिजाइन दुनिया भर में आसानी से उपलब्ध हैं, लेकिन इससे हाथ से बने (Handmade) वस्त्रों की मांग और उनकी अनूठी बनावट (Texture) प्रभावित होती है। मशीन-मेड उत्पाद हस्तशिल्प की आत्मा को कमजोर कर सकते हैं।

आर्थिक न्याय और जीआई टैग (GI Protection)– यद्यपि कई कलाओं के पास भौगोलिक संकेतक (GI Tag) हैं, लेकिन वैश्विक स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय बौद्धिक संपदा कानूनों के क्रियान्वयन में ढिलाई के कारण स्थानीय कारीगरों को उनका उचित रॉयल्टी लाभांश नहीं मिल पाता।

निष्कर्ष एवं भावी सुझाव

निष्कर्ष – भारतीय लोक और जनजातीय कलाओं का अंतर्राष्ट्रीय फैशन में समावेशन केवल एक समकालीन ट्रेंड (Trend) नहीं है, बल्कि यह पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, पर्यावरण-अनुकूल जीवन शैली और आधुनिक विलासिता का एक स्थायी संगम है। स्थानीय शिल्पों को वैश्विक नीतियों और एथिकल सप्लाई चेन से जोड़कर भारत न केवल अपनी सांस्कृतिक विरासत को जीवित रख सकता है, बल्कि ग्रामीण और जनजातीय अर्थव्यवस्था को भी एक आत्मनिर्भर मॉडल प्रदान कर सकता है।

भावी सुझाव:

- **ब्लॉकचेन आधारित ट्रेसेबिलिटी (Blockchain in Supply Chain)–** लक्जरी कपड़ों में ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग किया जाना चाहिए ताकि वैश्विक ग्राहक क्यूआर कोड स्कैन करके सीधे यह जान सकें कि कपड़ा किस आदिवासी कारीगर ने बनाया है और उसकी कितनी राशि सीधे कारीगर के खाते में गई है।

- **सख्त बौद्धिक संपदा प्रवर्तन (WIPO Framework)–** भारत सरकार को विश्व बौद्धिक संपदा संगठन (WIPO) के मंचों पर जनजातीय कलाओं के एथिकल कॉपीराइट के लिए कड़े वैश्विक नियम बनाने की वकालत करनी चाहिए।
- **डिजाइनर–कारीगर सह–निर्माण (Co-creation Models)–** फैशन घरानों को कारीगरों को केवल 'श्रमिक' न मानकर उन्हें 'सह–डिजाइनर' (Co-creator) का दर्जा देना चाहिए और कलेक्टिव डिजाइनों पर उनका नाम दर्ज करना चाहिए।

यह शोध पत्र वैश्विक फैशन उद्योग में भारत की स्थानीय लोक और जनजातीय कला शैलियों के बढ़ते प्रभाव और रणनीतिक एकीकरण का मूल्यांकन करता है। समकालीन लक्जरी फैशन परिदृश्य में पश्चिमी डिजाइनों के एकाधिकार को चुनौती देते हुए, भारत के विभिन्न राज्यों की स्वदेशी कलाओं – जैसे बिहार की मधुबनी, महाराष्ट्र की वारली, मध्य प्रदेश की गोंड, गुजरात की पिथोरा और उत्तार–पूर्वी राज्यों की जनजातीय बुनावट ने वैश्विक रैंप पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। यह अध्ययन इन कलाओं के कलात्मक स्वरूप, वैश्विक वस्त्र उद्योग में इनके वित्तीय योगदान (निर्यात मूल्य), आपूर्ति श्रृंखला में राजस्व वितरण के मॉडल, और भारत सरकार के कपड़ा मंत्रालय की नवीनतम नीतियों (2026–27) के प्रभाव का विश्लेषण करता है। शोध में सांस्कृतिक संवेदीकरण (Cultural Appreciation) और कारीगरों के आर्थिक उत्थान की संभावनाओं को रेखांकित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Ministry of Textiles, Government of India. (2026). Annual Report on Handicrafts and Sustainable Textile Policies (2025-26). New Delhi: Policy Press.
2. Kumar, Ritu. (2019). Costumes and Textiles of Royal India. London: Christie's Books.
3. Sharma, E., & Singh, A. (2025). "The Commercialization of Gond and Warli Motifs in Western Prêt-à-Porter: An Empirical Study". Journal of Contemporary Fashion & Textiles, 14(2), 112-128.
4. World Intellectual Property Organization (WIPO). (2024). Protecting Indigenous and Tribal Textile Designs: A Global IP Framework. Geneva: WIPO Publications.
5. National Institute of Fashion Technology (NIFT). (2026). Craft Cluster Initiative Report: Integrating Mithila and Naga Weaves into Global Luxury Markets. New Delhi: NIFT Academic Journal.
6. Das, S. (2025). "Sustainibility and Eco-Luxury: How Indian Folk Art is Shaping the Post-Fast-Fashion Era". International Journal of Sustainable Design, 8(4), 45-59.

तालिका 1: वैश्विक बाजार मूल्यांकन एवं निर्यात मेट्रिक्स (अनुमानित डेटा 2026–27)
यह तालिका विभिन्न कला रूपों के मुख्य वैश्विक बाजारों, उनके निर्यात मूल्य और वैश्विक मंच पर उनके प्रीमियम प्राइसिंग (मूल्य वृद्धि) को दर्शाती है।

कला शैली (Art Form)	मुख्य स्थानीय क्षेत्र (Origin)	प्रमुख वैश्विक बाजार (Global Markets)	वार्षिक निर्यात मूल्य (Est. Mn USD)	प्रीमियम प्राइसिंग इंडेक्स (Base 100)
मधुबनी (Mithila)	बिहार (दरभंगा, मधुबनी)	यूएसए, फ्रांस, जापान	$42.5 Mn	280%(लक्जरी स्कार्फ/एपेरल)
वारली (Warli)	महाराष्ट्र (पालघर, ठाणे)	जर्मनी, इटली, जापान	$28.0 Mn	150% (स्ट्रीटवियर/रेडी–टू–वियर)
गोंड (Gond Art)	मध्य प्रदेश (डिंडोरी)	यूके, फ्रांस, यूएई	$35.2 Mn	350% (हाथ की कढ़ाई/लक्जरी)
पिथोरा (Pithora)	गुजरात (छोटा उदेपुर)	इटली, यूएसए	$14.5 Mn	210% (स्टेटमेंट विंटर वियर)
उत्तर–पूर्वी वस्त्र	नागालैंड, असम	स्कैंडिनेवियन देश, यूके	$22.1 Mn	190% (सस्टेनेबल विंटर कोट)

तालिका 2: आपूर्ति श्रृंखला राजस्व वितरण मैट्रिक्स (Value Chain Analysis)
यह तालिका पारंपरिक बिचौलिया मॉडल बनाम एथिकल डायरेक्ट–टू–आर्टिसन (Ethical/Direct Collaboration) मॉडल का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करती है, जो यह दर्शाता है कि वैश्विक फैशन से कारीगरों को कितना वास्तविक लाभ मिल रहा है।

राजस्व हिस्सेदारी खंड (Revenue Share Segment)	पारंपरिक बिचौलिया मॉडल (Middleman Model)	एथिकल/डायरेक्ट सहयोग मॉडल (Direct Collaboration)
मूल जनजातीय कारीगर (Artisan Share)	3% – 5%	35% – 45%
स्थानीय एग्रीगेटर/ बिचौलिया	25% – 30%	5% – 10% (केवल लॉजिस्टिक्स सहकारी समितियां)
डिजाइनर / ब्रांड मार्जिन	40% – 50%	25% – 30%
अंतर्राष्ट्रीय मार्केटिंग और रिटेल	20% – 25%	20% – 25%
कारीगर सामाजिक सुरक्षा कोष	0%	5% (गवर्नेंस एस्क्रो अकाउंट)

तालिका 3: कपड़ा मंत्रालय की नीतियों का तुलनात्मक चार्ट

योजना / नीति का नाम	प्रमुख उद्देश्य एवं बजटीय ढांचा	पारंपरिक लोक व जनजातीय कला क्षेत्र पर प्रभाव	वैश्विक फैशन व निर्यात में प्रासंगिकता
महात्मा गांधी ग्राम स्वराज योजना	खादी, हथकरघा(**Handloom**) और ग्रामीण हस्तशिल्प समूहों को सुदृढ़ करना। वैश्विक बाजार लिंटेज और ब्रांडिंग पर विशेष ध्यान।	पारंपरिक जनजातीय कारीगरों (जैसे वारली, गोंड कलाकार) के उत्पादों को डायरेक्ट बाज़ार पहुंच (**Direct Market Access**) प्रदान करना और बिचौलियों का प्रभाव कम करना।	वैश्विक लक्ज़री ब्रांडों के साथ सीधे समन्वय को बढ़ावा देना, जिससे हस्तनिर्मित आदिवासी शिल्पों को 'प्रीमियम हेरिटेज टैग' मिल सके।
समर्थ **2.0** (**Samarth 2.0 Initiative**)	कपड़ा मूल्य श्रृंखला में कौशल विकास पारिस्थितिकी तंत्र का आधुनिकीकरण। उद्योग और **NIFT** जैसे शीर्ष संस्थानों के साथ सहयोग।	ग्रामीण महिलाओं और आदिवासी कलाकारों का कौशल उन्नयन (**Upgradation**) करना, ताकि वे वैश्विक परिधान मानकों के अनुसार डिजाइन बना सकें।	अंतर्राष्ट्रीय 'प्रेट-ए-पोर्टर' (**Ready-to-wear**) फैशन की मांग के अनुरूप फिनिशिंग, गुणवत्ता नियंत्रण और समकालीन सिल्हूट डिजाइनिंग का प्रशिक्षण।
टेक्स-रैम्प्स (**TEX-RAMPS Scheme**)	**100%** केंद्रीय वित्त पोषित योजना। लक्षित अनुसंधान, एकीकृत सांख्यिकीय प्रणालियों और क्षेत्रीय योजना के माध्यम से नवाचार को बढ़ावा देना।	पारंपरिक जनजातीय कला समूहों के डेटा का डिजिटलीकरण करना और उनके भौगोलिक संकेतक (**GI Tags**) की सुरक्षा के लिए मजबूत ढांचा बनाना।	सांस्कृतिक विनियोग (**Cultural Appropriation**) को रोकने के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान करना और एथिकल सोर्सिंग के वैश्विक मानकों को लागू करना।
टेक्स्ट इको इनिशिएटिव (**Text Echo Initiative**)	वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, पर्यावरण-अनुकूल और टिकाऊ (**Sustainable**) कपड़ा व परिधान उत्पादन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देना।	आदिवासी कलाओं में प्रयुक्त होने वाले प्राकृतिक रंगों (नील, हल्दी) और अहिंसा सिल्क/खादी के पारंपरिक उपयोग को पुनर्जीवित करना।	वैश्विक बाजारों (**USA, EU**) में '**Eco-friendly Luxury**' और सस्टेनेबल फैशन की तीव्र मांग को पूरा करना, जहां इसके लिए प्रीमियम मूल्य मिलता है।
पीएम मित्रा पार्क योजना (**PM MITRA Parks**)	**4,445** करोड़ के परिव्यय से **7** राज्यों में विश्व-स्तरीय एकीकृत टेक्सटाइल पार्क।	पारंपरिक बुनावट (जैसे उत्तर-पूर्वी नागा/राभा वस्त्र) को लॉइन-लूम से निकालकर बड़े पैमाने पर आधुनिक विनिर्माण केंद्रों से जोड़ना।	लॉजिस्टिक्स लागत को कम करके भारतीय जनजातीय रूपांकनों (**Motifs**) पर आधारित फैब्रिक को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला (**Global Supply Chain**) का हिस्सा बनाना।

****